International Journal of Research in Social Sciences and Humanities http://www.ijrssh.com

(IJRSSH) 2014, Vol. No. 4, Issue No. I, Jan-Mar **ISSN: 2249-4642**

आलोच्य काव्यों में अभिव्यंजन सौन्दर्य

डॉ नीरज कुमारी

सह . आचार्य, संस्कृत विभाग, ठाकुर बीरी सिंह महाविद्यालय, टूंडला, फिरोजाबाद, भारत

BEAUTY OF EXPRESSION IN CRITICAL POEMS

Dr. Neeraj Kumari

Associate Professor, Sanskrit Department

Thakur Biri Singh Degree College Tundla, Firozabad, India

IJRSSH

ABSTRACT

From time immemorial, human beings have been communicating the feelings/thoughts of the heart through symbols, signs or expressed language according to the situation/time. Out of these, language is the successful/powerful medium of expression, if emotion is life then language is body. Language is a social condition and its certain process, that is why arrangements have to be made to bring linguistic beauty and comfort in it. The impulse of emotions and the storm of thoughts keeps on stirring the heart, whose expression is possible only through regular language. This language is used in two forms- moving language is used in daily life, we call it ordinary language.

मनुष्य आदि काल से हृदयस्थ भावों / विचारों का सम्प्रेषण परिस्थिति * समय के अनुसार प्रतीक, संकेत या व्यक्त भाषा के माध्यम से करता चला आ रहा है। इनमें से भावाभिव्यक्ति का सफल / सशक्त माध्यम भाषा है, यदि भाव प्राण हैं तो भाषा शरीर है । भाषा एक सामाजिक अवस्था और उसकी एक निश्चित प्रक्रिया है, इसीलिए भाषागत सौन्दर्य तथा उसमें सौकर्य लाने के लिए व्यवस्था लानी पड़ती है । भावनाओं का आवेग और विचारों का झंझावात हृदय को आन्दोलित करता रहता है, जिसकी अभिव्यंजना नियमबद्ध भाषा से ही संभव है । यह भाषा दो रूपों में व्यवहत की जाती है- दैनिक जीवन के कार्य व्यापारों में चलती भाषा प्रयुक्त होती है, इसे हम साधारण भाषा कहते हैं।

(क) भाषिक सम्पदा

(१) भाषा स्वरूप-

साहित्यकार/कवि उसे विशिष्ट या काव्य-भाषा बनाने के लिए व्याकरण का बंधन तो अवश्य स्वीकार करता है, है, किन्तु उसमें विशिष्ट अर्थाभिव्यंजना, वैदग्ध्यपूर्ण कथन का समावेश करता है। साहित्यिक भाषा सामान्य

जन भाषा से विशिष्ट रूप में प्रयुक्त होती है । कवि को एक ओर व्याकरणगत नियमों को स्वीकार करना पड़ता है, तो दूसरी ओर शब्दों के समाजगत अर्थ का भी ध्यान रखना पड़ता है। इस प्रकार काव्य की भाषा में स्थिरता रहती है और सामान्य बोल-चाल की भाषा में गतिमयता । लोकभाषा या जनभाषा में शब्द- समूह की प्रधानता रहती है तो काव्य भाषा में शब्द की इकाई के साथ अर्थ सौरस्य । रेन बेलेक ने लिखा है कि कविता की भाषा बोलचाल की भाषा से पृथक रहती है । यह विभेद रूपगत रहता है ।'

जनभाषा और काव्यभाषा का अन्तर निरूपित करते हुए डॉ० शान्तिस्वरूप गुप्त ने लिखा है कि कविता में शब्द तो लोक-भाषा के ही होते हैं, पर काव्य-भाषा का इसमें अपना प्रयोग रहता है । दैनिक जीवन में प्रयुक्त एक शब्द प्रायः एक ही अर्थ देता है पर काव्य-भाषा में अर्थ साहचर्य परिस्थिति या वक्ता के बलाघात के कारण बिम्बात्मक तथा सांकेतिक होने के कारण अनेक अर्थ- छवियों को प्रगट करते हैं। साधारण भाषा में यह गुण नहीं मिलते हैं । अपनी लयात्मकता के कारण काव्यभाषा साधारण से भिन्न हो जाती है । तीव्र भावाभिव्यक्ति की भाषा स्वतः अलंकारमयी हो जाती है, क्योंकि यह साधारण क्षणों की भाषा नहीं है ।

उपर्युक्त विवेचन से यह सहज ही स्पष्ट हो जाता है कि काव्य भाषा का मूल स्रोत जनभाषा ही है, किन्तु विशिष्ट क्षणों के कारण वह जन भाषा से भिन्न हो जाती हैं। श्रेष्ठ साहित्यकार का यह प्रयास रहता है कि वह लोक-भाषा के निकट रहे और उसके तत्वों से अनुप्राणित रहे। यह बात हम वाल्मीकि के मुख से निःसृत 'मानिषाद्' वाले श्लोक से समझ सकते हैं । प्राकृतिक सुरम्य परिवेश में मिथुन रत क्रौंच युग्म से एक का वध हो जाने पर दूसरे के कारुणिक विलाप से द्रवित कवि का श्लोक जितना प्रासंगिक, भावमय, स्वतःस्फूर्त है, उतना ही सहज और प्रतीकात्मक भी है।

यहाँ आलोच्य काव्यों के भाषिक सौन्दर्य संवाद योजना, भाषा-स्वरूप-गत वैविध्य, अर्थाभिव्यंजन की विभिन्न विभिन्न प्रणालियाँ, छन्दगत वैविध्य, अर्थाभिव्यंजन की विभिन्न प्रणालियाँ, रसानुकूल भाषा प्रयोग और शब्द-शक्तियों जैसे मानदण्डों द्वारा व्यक्त किया जा रहा है। वाल्मीकि रामायण की भाषा संस्कृत है तो अरुण रामायण की भाषा परिमार्जित हिन्दी भाषा है । भाषागत वैभिन्न होते हुए भी भाषिक प्रतिमानों के प्रयोग से कथ्य में संप्रेषणीयता समान रूप से मिलती है । यहाँ यह लिखना अप्रासंगिक न होगा कि कवि-साक्षात्कृत सौन्दर्य को जिस माध्यम से सफलता सहृदय के संक्रमण में है । यह शक्ति में ही निहित होती है ।

भाषा वैविध्य-

भिन्न- भाषा के काव्य-ग्रंथों का भाषागत वैशिष्ट्य जानने के लिए सौशब्दय मुख्य साधन / मापदण्ड है । डॉ० राजकुमार पाण्डेय ने लिखा है, कि किसी भी कवि की भाषागत कलात्मकता को प्रस्तुत करने की दिशा में सबसे पहले हमारा ध्यान उस कवि की शब्द चयन सम्बन्धी पटुता की ओर आकृष्ट हुए बिना नहीं रहता है । मेरा अभीष्ट यह है कि शब्द संस्थापना की कला में जो कवि जितना ही निष्णात होगा, उतना ही उसकी भाषा की समग्र चेतना भी मर्मस्पर्शिनी होगी, किन्तु इसके लिए कवि को शब्द-शक्ति, शब्द संगीत, ध्वनि-बिम्ब-ग्रहण प्रभान्वित प्रसाद गुण नियोजना सदृश अनेक सूक्ष्म तत्वों को भी कौशल के साथ ग्रहण करना पड़ता है । काव्यात्मक संचेतना का सौन्दर्य नाद एवं संगीत का संस्पर्श पाकर निखर उठता हैं पात्रों की मनोगत सूक्ष्म

IJRSSH

भावों की अभिव्यंजना की दिशा से तो महाकाव्यों में ऐसे सार्थक शब्द संघटना का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। किसी भी पात्र के शील उद्‌घाटन अथवा व्यक्तित्व के प्रकाशन में अनुकूल शब्द योजना के शैथिल्य से कितनी बड़ी आच्छन्नता एवं अस्वाभाविकता आ सकती है, कुशल शब्द शिल्पी को इस तथ्य का पूरा-पूरा परिचय रहा करता है।'

शब्द-योजना- हिन्दी भाषा भाषा परिमार्जित है, जिसमें तत्सम तद्भव, देशज, लोकोक्तियों, मुहावरों का प्रयोग किया गया है । इससे भाषा में चमत्कार उत्पन्न हुआ है। कुछ उदाहरण पर्याप्त होंगे ।

पात्रानुकूल शब्द-योजना- किसी भी व्यक्ति / पात्र के व्यक्तित्व, उसके संस्कार, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा-दीक्षा का ज्ञान उसकी भाषा से हो जाता है। आलोच्य काव्यों में इसका ध्यान रखा गया है।

कस्यायमाश्रमः पुण्यः कोन्वस्मिन् वसते पुमान् ।

भगवंछ्रोतुमिच्छावः परं कौतूहलं हिनौ ।।

इसी प्रकार स्त्री की अवध्यता पर उनके ऊहापोह का चित्रण कवि ने इस प्रकार किया है-

न ह्येनामुत्सहे हंतु स्त्री स्वभावेन रक्षितम् ।

वीर्य चास्या गतिं चैव ह न्यामिति हि मे मतः ।

इसी प्रकार परशुराम के ललकारने पर राम शिव धनुष लेकर ओज गुण युक्त शब्दों का प्रयोग करते हैं-

वीर्य हीनमिवाशक्तं क्षत्रधर्मे णभार्गव ।

अव जानासि मे तेजः पश्यमेय पराक्रमम् !

खर को फटकारते हुए राम कहते हैं-

अद्य भित्वा मया मुक्ताः शराः कांचन भूषणाः ।

विदार्यातिपतिष्यन्ति वल्मीकमिव पन्नगाः ।

पापमापरतां घोरं लोकस्याप्रियमिच्छताम् ।

अहमासादितो राज्ञा प्राणान् हन्तु निशाचर ।।

द्रष्टव्य है कि राजा दशरथ स्वर्गवासी हो गये हैं। यह राम से प्रामाणिक अधिक कौन जानेगा, फिर भी राम राज्ञा शब्द का प्रयोग कर यह सूचित करना चाहते हैं कि राजा का कर्त्तव्य क्या है? सीता के समक्ष रावण के प्रणय निवेदन में किस प्रकार के शब्दों नियोजन कवि ने किया है- द्रष्टव्य है-

IJRSSH

ललस्व मयि विस्रव्धा धृष्टमासापयस्व च ।

मत्प्रसादाल्ललन्त्याश्च ललतां बांधवस्तव ||

चारूस्मिते चारुदति चारुनेत्रे विलासिनि ।

मनोहरसि मे भीरू सुपर्णः पन्नगं यथा ।।

भावानुकूल शब्द योजना- कवि के रचना संसार के पात्र स्वभावानुकूल या मनोभावों की अभिव्यक्ति के लिए जिस प्रकार के शब्दों / वाक्यों का चयन करते हैं, वे शब्द उनके मनोभावों के चित्रण में पूर्ण सफलता तभी मिलती है, जब वह पात्रों के भावानुकूल शब्द योजना का प्रयोग करता है। अशोक वाटिका स्थित सीता रावण से भयभीत अपने भावों को व्यक्त करती है, जिसमें एक ओर राम के प्रति अनन्यता है, तो दूसरी तरफ रावण के प्रति तिरस्कार है-

धिड्. माम नार्यामसतीं याह तेन बिना कृता ।

मुर्हूतमपि जीवामि जीवितं पाप जीविका ।।

छिन्ना भिन्ना प्रभिन्ना वा दीप्ता वाग्नी प्रदीपिता ।

रावणं नोपतिष्ठेयं किं प्रलापेन वश्चिरम ।।

ख्यातः प्राज्ञः कृतज्ञश्च सानुक्रोशश्च राघवः ।

सद्वृत्तो निरनुक्रोशः शंके भद्रांग्यसंक्षयात् ।।

रावण वध के पश्चात् यही सीता राम के अपवाद से मर्माहत हो कहती हैं-

सह ते ऽहं न विज्ञाता हता तेनास्मि शाश्वतम् ।।

न वृथा ते श्रमोऽयं स्यात संशये न्यस्य जीवितम् ।

सुहृज्जन परिक्लेशो न चायं विफलस्तव ।।

त्वया तु नृप शार्दूल रोषमेवानुवर्तता ।

लघुनेव मनुष्येण स्त्रीत्वमेव पुरस्कृतम् ॥

रामावतार पोद्दार ने आलोच्य काव्यों में ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है, जिससे रस-गुण-सम्पन्न भाषा का सुष्ठु प्रयोग स्वरूप सामने प्रगट हुआ है । कोमल और कठोर रसों के लिए भाषागत भिन्नता स्वाभाविक रूप में प्रयुक्त है। हनुमान से सीता की स्थिति सुन कर राम का विरह इन शब्दों से व्यक्त हुआ है-

IJRSSH

नय मामपि नं देशं यत्र दृष्टा मम प्रिया ।

नतिष्ठेयं क्षणमपि प्रवृत्ति मुप लभ्य च ।।

कथं सा मम सुश्रोणि भीरू भीरू: सती तदा ।

भयावहानां घोराणां मध्ये तिष्ठति रक्षसाम् ।।

शारदास्तिमिरोन्मुक्तो नूनं चन्द्र इवांबुदैः ।

आवृतो वदनं तस्या न विराजति साम्प्रतम् ।।

मधुरा मधुरालापा किमाह मम सामिनी।

वीररस और युद्ध में चपलता के लिए अतिश्योक्ति अलंकार के प्रयोग से भाषागत त्वरा दर्शनीय है-

नयादानं न संधान धनुषो वा परिग्रहः ।

न विप्रमोक्षो वाणानां न विकर्षो न विग्रहः ।

न मुष्टि प्रति संधानं न लक्ष्य प्रति पादनम्

अदृश्यत तयोस्तत्र युध्यतोः पाणि लाघवात् ।।

वक्तृत्व कला की व्यंजना करने वाले शब्द- डॉ० राजकुमार पाण्डेय ने लिखा हैं कि कवि की बक्तृत्व शक्ति का स्पष्ट आभास देने वाली शब्द संघटन का वह जाग्रत रूप जहाँ एक ही केन्द्रीय भाव की व्यंजना अनेक विधाओं से की जाती है । व्यंजना की यह प्रणाली न केवल सम्पूर्ण वक्तव्य को ही अधिक प्रभावोत्पादक बना देती है, वरन् कवि के अगाध भाषा पाण्डित्य की ओर पाठकों की दृष्टि को आकर्षित किये बिना नहीं रहती ।

वाल्मीकि रामायण में राम-वन-गमन प्रसंग में भरत राम से आग्रह पूर्वक अयोध्या चलने का आग्रह करते हैं, जिसे राम ने अपनी वक्तृत्व कला से निरुत्तरित कर दिया। राम ने संक्षिप्त रूप में ऐसे विशेषणों का प्रयोग किया है, जो राम और भरत दोनों पर समान रूप में उपयुक्त हैं-

कुलीनः सत्त्व सम्पन्नस्तेजस्वी चरित व्रतः ।

राज्य हेतोः कथं पापमाचरेन्मद्विधो जनः ।।

काम कारो महाप्राज्ञ गुरुणां सर्वदानघ ।

उपपन्नेषु दारेषु पुत्रेषु च विधीयते । ।'

IJRSSH

इसी प्रकार विभीषण की शरणा गति के समय अंगद और हनुमान के वक्तव्य मनोवैज्ञानिक और वक्तृत्व कला के निदर्शन है- (9)

छादयित्वाऽत्मभावं हि चरन्ति शठ बुद्धयाः ।

प्रहरन्ति च रन्ध्रेषु सोऽनर्थः सुमहान् भवेत ।। "

(२) एष देशश्च कालश्च भवतीह यथा तथा ।

पुरुषात् पुरुषं प्राप्य तथा दोष गुणावपि ।

दौरात्म्यं रावणे दृष्टवा विक्रमं च तथा त्वयि ।

युक्तमागमनं ह्यत्र सदृशं तस्य बुद्धितः ।। *

आलोच्य दोनों कवियों की शब्द योजना को देख कर यह निर्भ्रान्त रूप से कहा जा सकता है, कि प्रसंग एवं भाव/परिस्थिति विशेष की कोमलता/कठोरता के निदर्शन के लिए ऐसे सौशब्द का प्रयोग किया गया है, जिससे नादात्मकता मूर्तमंत हो उठी है। प्रकृति चित्रण के कुछ उदाहरण वाल्मीकि से उधृत हैं -

(१) क्वचित् प्रकाशं क्वचिद् प्रकाशं,

नभः प्रकीर्णाम्बुधरं विभाति ।

क्वचित्क्वचित् पर्वत संनिरुद्ध

रूपं यथा शान्त महार्णवस्य ॥

(२) वहन्ति वर्षान्ति नदन्ति भान्ति,

ध्यायन्ति नृत्यन्ति समाश्वंसन्ति ।

नद्यो घना मत्त गजा बनान्ता

प्रिया विहीनाः शिखिनः प्लवंगमाः ।।

कहना नहीं होगा कि भाषा की इंद्रियगोरचता वर्णध्वनि से सम्बन्धित हैं । विशिष्ट शब्द अर्थ-सौन्दर्य के अभिव्यक्ति में सहायक बन पड़े हैं। वर्णों के विशिष्ट प्रयोग में वाल्मीकि की दृष्टि अत्यन्त व्यापक है ।

संवाद योजना-

जिस प्रकार जागतिक मनुष्य परस्पर सम्भाषण से अपने भाव एवं विचारों को सम्प्रेषित करता है, उसी प्रकार साहित्यकार द्वारा निर्मित संसार के पात्र भी हृदयस्थ भावों एवं विचारों को संवादों के ही माध्यम से व्यक्त

IJRSSH

करता है । इन संवादों के माध्यम से जहाँ एक ओर कथावस्तु का विकास, पात्रों का चरित्र-चित्रित किया जाता है, वहीं पात्रस्थ हृदय के सद्-असद् विचारों का ज्ञापन भी होता चलता है। साहित्यशस्त्र में यह प्रत्यक्ष कथन शैली कहलाती है। इन संवादों से पात्रों की आन्तरिक स्थिति का भी बोध होता है । संवादों के वर्गीकरण के अनेक आधार हैं । कुछ संवाद सोदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं--

(१) छोटे संवाद- घटना की क्षिप्रता या पात्रस्थ मनोदशा का चित्रण छोटे संवादों से सफलतापूर्वक हो जाते हैं । विश्वामित्र की याचना, मेनका विश्वामित्र - प्रणय प्रसंग, पुत्रेष्टि यज्ञ ऋष्यश्रृंग प्रसंग, कैकेयी का हट, भरद्वाज-प्रसंग, शूर्पणखा की असफलता, रावण के अनेक तर्क इन संवादों से प्रभावी बन पड़े हैं ।

(क) अपि ते संतताः सर्वे सामन्तरिपवोजिताः ।

दैवं च मानुषं चैव कर्मते साध्वनुष्ठितम् ।।

पात्रभूतोऽसि में ब्रह्मन् दिष्ट्या प्राप्तोऽसि मानद ।

अद्य में सफलं जन्म जीवितं च सुजीवितम् ।।'

दीर्घ संवाद- भाव, विचार-मंथन के समय वक्ता अपना अभिप्राय जब व्यक्त करता है, तब दीर्घ, लम्बे संवादों का उपयोग करता हैं। धर्म, सदाचार, राजनीति पर सिद्धान्त वाक्य कहना अधिक समय की माँग होती है । लक्ष्मण - परशुराम संवाद, दशरथ, कैकेयी-प्रसंग हनुमान- रावण-अंगद प्रसंग के स्थलों में वक्ता बड़ी देर तक अपनी विविक्षा व्यक्त करता है । दशरथ की कैकेयी के प्रति आसक्ति देखिए-

(क) न तोऽहमभि जानाभि क्रोधात्मनि संश्रितम् ।

देवि केनाभियुक्तामि केन वासि विमानिता ।।

यदिदं मम दुःखाय शेषे कल्याणि पांसुषु ।

भूमौ शेषे किमर्थं त्वं मयि कल्याण चेतसि ।।

भूतोपहतचित्तेव ममचित्त प्रमाथिनि

संति में कुशला वैद्यास्त्वभितुष्टाश्च सर्वशः ।।

सुखितां त्वां करिष्यन्ति व्याधिमाचक्ष्व भामिनि ।

कस्यवापि प्रियं कार्ये केन वा विप्रियं कृतम् ।

कः प्रियं लभतामय को वा सुमहदप्रियम् ।।

मा रौत्सीम च कार्षीस्त्वं देवि संपरि शोषणम् ।।

IJRSSH

अवध्यो वध्यतां को वा वध्यः को वा विमुच्यताम् ।।

दरिद्रः को भवेदाद्यो द्रव्यवान् वाप्यकिंचनः ।।'

चरित्र-चित्रण करने वाले संवाद- इनके अन्तर्गत वे संवाद आते हैं, जिनके माध्यम से किसी पात्र के चरित्र, उसके किसी पक्ष को उजागर किया जाता है। संवाद मूलतः नाटक के प्राण हैं, फिर भी महाकाव्यों में वृहद् जीवन-दर्शन का चित्रण होता है, अतः तन्निविष्ट पात्र हृदयस्थ मनोभावों को व्यक्त करने, दूसरे के विचारों से अवगत होने के लिए परस्पर संवाद स्थापित करते हैं। इस प्रकार के संवादों से उनका चरित्र व्यंजित होता है । विश्वामित्र वशिष्ट वैर-भाव की कथा सुनाते हुए सतानन्द - ने राम से कहा कि विश्वामित्र समस्त मुनियों में श्रेष्ठ है-

एवं राम मुनि श्रेष्ठ एव विग्रह वांस्तपः । एष धर्म परोनित्यं वीर्यस्यैष परायणम् ।

इसी प्रकार काव्यों में प्रमुख पात्रों के केन्द्रीय व्यक्तित्व तत्वों का उद्‌घाटन संवादों द्वारा ही व्यंजित हुआ है। आदि काव्य रामायण में कथा वर्णन प्रधान हैं। अतः संवादों का प्रयोग अधिक नहीं हुआ है । कवि ने प्रत्यक्ष कथन से ही पात्रों का चरित्र अंकित किया है ।

नाटकीय संवाद-

नाटकीयता नाटक का मूल तत्त्व हैं इसके अन्तर्गत कथा के संधिस्थल, मोड़, आरोह-अवरोह पात्रों के आकस्मिक क्रिया-कलापों का चित्रण होता है। वाल्मीकि रामायण में इस प्रकार के संवादों के अनेक उदाहरण हैं ।

वीर्यहीनमिवाशक्तं क्षत्रधर्मेण भार्गव ।

अवजानासि में तेजः पश्यमे ऽद्य पराक्रमम् ।।

ब्राह्मणो ऽसीति पूज्यों में विश्वामित्र कृतेन च ।

तस्माच्छ्त्तो न ते राम मोक्तुं प्राण हरं शरम् ।।'

उपसंहार

सारांश यह है, कि अलंकृतानलंकृत संवाद योजना अर्थ-सौन्दर्य की अभिव्यक्ति में सहायक ही नहीं हुई, अपितु पात्रस्थ मनोभावों का सटीक निदर्शन भी हुआ है ।

सन्दर्भ

1. ए हिस्ट्री ऑव मार्डन क्रिटिसिज्म पृ० ४१
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त, ५०- १३०

IJRSSH

3. अरुण, पृ०- ५६०
4. अरुण, पृ०- २२५
5. वा०रा० 9/28/5
6. वा०रा० १२६१२
7. वा०रा० १८७६/३
8. वा०रा० ३/२६/१०-१९
9. वा०रा० ५/२१८२४, २८
10. अरुण- पृ०-४
11. अरुण- पृ०-४६२
12. वा०रा० ५/६६/१३-१५
13. वा०रा० ६/८६/२६-३०
14. अरुण, पृ० २८.
15. अरुण, पृ० ४३
16. रामचरित मानस का शास्त्रीय अध्ययन, पृ० - ३४४-४५

REFERENCES

1. A History of Modern Criticism p. 41
2. Principles of Western Poetry, 50-130
3. Arun, page 560
4. Arun, page 225
5. V.R. 9/28/5
6. VR 12612
7. V.A. 1876/3
8. VA 03/26/10-19
9. Va.ra. 5/21824, 28
10. Arun - Page 4
11. Arun - page 462
12. VA 05/66/13-15
13. V.R. 6/86/26-30
14. Arun, page 28.
15. Arun, p.43
16. Classical study of Ramcharit Manas, page 344-45

IJRSSH